अध्याय 3: एक आशीर्वाद

विषय-सूची — 5 प्रश्नावली · 10 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1	मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)	4 प्रश्न
प्रश्नावली 3.2	मिलकर करें मिलान (पंक्ति–भाव मिलान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.3	पंक्तियों पर चर्चा (भावार्थ)	3 प्रश्न
प्रश्नावली 3.4	कविता का शीर्षक (वैकल्पिक शीर्षक)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.5	भाषा की बात — असमानार्थी शब्द पहचान	1 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1

कविता में किसे संबोधित किया गया है? • युवा वर्ग को • नागरिकों को • बच्चों को • श्रमिकों को

हल

कविता में 'जा, तेरे स्वप्न बड़े हों' कहकर किसी ऐसे व्यक्ति को संबोधित किया गया है जो जीवन की शुरुआत में है।
'भावना की गोद से उतरकर जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें' पंक्ति में एक बच्चे के पहले कदम उठाने का भाव है — यह बच्चों को संबोधन की ओर संकेत करता है।
साथ ही 'अपने पाँवों पर खड़े हों' और 'तेरे स्वप्न बड़े हों' जैसी पंक्तियाँ युवा वर्ग को भी आशीर्वाद देती हैं।
पाठ्यपुस्तक में लिखा है — 'कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं' — अतः युवा वर्ग को और बच्चों को — दोनों उत्तर सही हैं।

उत्तर: • युवा वर्ग को • बच्चों को (दोनों सही हैं)

प्रश्न 2

"तेरे स्वप्न बड़े हों" पंक्ति में 'स्वप्न' से क्या आशय है? • कल्पना की उड़ान भरना • आकांक्षाएँ और रुचियाँ रखना • बहुत-सी उपलब्धियाँ पाना • बड़े लक्ष्य निर्धारित करना

हल

कविता में 'स्वप्न' का अर्थ महज नींद में देखे जाने वाले स्वप्न नहीं है, बल्कि जीवन में पाने की आकांक्षाएँ हैं।
'चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें' — यह पंक्ति बड़े और कठिन लक्ष्य निर्धारित करने की बात करती है।
अतः 'आकांक्षाएँ और रुचियाँ रखना' तथा 'बड़े लक्ष्य निर्धारित करना' — दोनों उत्तर सही हैं।
ध्यान दें: कविता में 'स्वप्न' शब्द एकवचन है परंतु उसका भाव बहुआयामी है।

उत्तर: • आकांक्षाएँ और रुचियाँ रखना • बड़े लक्ष्य निर्धारित करना (दोनों सही हैं)

प्रश्न 3

"उँगली जलाएँ" पंक्ति में उँगली जलाने का भाव है— • चुनौतियों को स्वीकार करना • प्रकाश का प्रसार करना • अग्नि के ताप का अनुभव करना • कष्टों से नहीं घबराना

हल

कविता में पहले 'हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ' कहा गया है — ज्ञान और उपलब्धि के हर स्रोत की ओर आकर्षित होने का भाव।
फिर 'उँगली जलाएँ' — अर्थात् उस लक्ष्य को पाने के लिए कष्ट उठाने से न घबराना; दीये की रोशनी पाने की कोशिश में उँगली जलना जोखिम स्वीकार करने का प्रतीक है।
यह 'चुनौतियों को स्वीकार करना' और 'कष्टों से नहीं घबराना' — दोनों भावों को व्यक्त करता है।
मुख्य भाव: लक्ष्य के लिए कठिनाइयाँ सहने का साहस रखें।

उत्तर: • चुनौतियों को स्वीकार करना • कष्टों से नहीं घबराना (दोनों सही हैं)

प्रश्न 4

"अपने पाँवों पर खड़े हों" पंक्ति से क्या आशय है? • अपने पैरों पर खड़े होना • सफलता प्राप्त करना • कठिनाइयों का सामना करना • आत्मनिर्भर होना

हल

यह पंक्ति शाब्दिक अर्थ में नहीं है — 'पाँवों पर खड़े होना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है दूसरों पर निर्भर न रहना।
कविता का समग्र भाव है — बड़े सपने देखो, भावनाओं से ऊपर उठो, लक्ष्यों के लिए संघर्ष करो और अंततः स्वयं अपने बल पर खड़े हो जाओ।
अतः 'आत्मनिर्भर होना' इस पंक्ति का सटीक और गहरा आशय है।

उत्तर: • आत्मनिर्भर होना

प्रश्नावली 3.2 — मिलकर करें मिलान (पंक्ति–भाव मिलान)

प्रश्न 1

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों को उनके सही भाव अथवा संदर्भों से मिलाइए। स्तंभ 1: 1. भावना की गोद से उतरकर जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें 2. हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ 3. चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें 4. ...हँसें/मुसकराएँ/गाएँ स्तंभ 2: 1. विविध ज्ञान के प्रति आकृष्ट होना और उसे पाने की ललक होना 2. सपनों को आनंद और मुस्कुराहटों में बदलें। कठिन परिस्थितियों में भी मनोबल बनाए रखें। 3. भावनाओं में न बहकर वास्तविकता का सामना करना 4. असंभव से लगने वाले लक्ष्यों के लिए हठ और प्रयास करना

हल

स्तंभ 1 (1) → स्तंभ 2 (3): 'भावना की गोद से उतरकर जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें' — भावनाओं में न बहकर वास्तविकता का सामना करना। (भावना = कल्पना/भावुकता; पृथ्वी = व्यावहारिक जीवन।)

स्तंभ 1 (2) → स्तंभ 2 (1): 'हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ' — विविध ज्ञान के प्रति आकृष्ट होना और उसे पाने की ललक होना। (हर दीया = ज्ञान का हर स्रोत; ललचाना = पाने की तीव्र इच्छा।)

स्तंभ 1 (3) → स्तंभ 2 (4): 'चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें' — असंभव से लगने वाले लक्ष्यों के लिए हठ और प्रयास करना। (चाँद-तारे = दूर के लक्ष्य; रूठना-मचलना = हठ, ज़िद।)

स्तंभ 1 (4) → स्तंभ 2 (2): '...हँसें/मुसकराएँ/गाएँ' — सपनों को आनंद और मुस्कुराहटों में बदलें। कठिन परिस्थितियों में भी मनोबल बनाए रखें।

उत्तर: 1→3, 2→1, 3→4, 4→2

प्रश्नावली 3.3 — पंक्तियों पर चर्चा (भावार्थ)

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए— (क) "जा, तेरे स्वप्न बड़े हों"

हल

कवि दुष्यंत कुमार इन पंक्तियों में किसी प्रिय व्यक्ति (संभवतः एक बच्चे या युवा) को विदा देते हुए आशीर्वाद दे रहे हैं।

'जा' — आगे बढ़ो, जीवन में प्रवेश करो।

'तेरे स्वप्न बड़े हों' — तुम्हारी आकांक्षाएँ, लक्ष्य और इच्छाएँ महान हों, साधारण न रहें।

यह एक आशीर्वाद है कि जीवन में बड़े सपने देखो और उन्हें पाने का साहस रखो।

उत्तर: 'जा, तेरे स्वप्न बड़े हों' — कवि का आशीर्वाद है: आगे बढ़ो और बड़े लक्ष्य, ऊँची आकांक्षाएँ रखो।

प्रश्न 2

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए— (ख) "जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें"

हल

यह पंक्ति 'भावना की गोद से उतरकर' के साथ आती है।

'भावना की गोद' — भावुकता, कल्पना, या माँ का आँचल (बचपन की सुरक्षा) का प्रतीक है।

'जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें' — व्यावहारिक जीवन में उतरना, वास्तविकता का सामना करना।

कवि कहते हैं कि भावनाओं में अधिक खोए न रहो — जल्दी वास्तविक दुनिया को समझो और उसमें अपने पाँव जमाओ।

उत्तर: 'जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें' — भावनाओं की छाया से बाहर आकर वास्तविक जीवन में कदम रखो और व्यावहारिकता सीखो।

प्रश्न 3

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए— (ग) "चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें"

हल

'चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयाँ' — वे महान सत्य, लक्ष्य और उपलब्धियाँ जो असंभव या बहुत कठिन लगती हैं — जैसे चाँद-तारों तक पहुँचना।

'रूठना-मचलना सीखें' — हठ करना, ज़िद करना; बच्चे की तरह रूठकर अपनी बात मनवाने की तरह इन कठिन लक्ष्यों के लिए अडिग रहें।

कवि का भाव है: जो लक्ष्य असाध्य लगते हों, उनके लिए भी हार न मानो — बालहठ की तरह उनसे चिपटे रहो, उन्हें पाने की कोशिश करते रहो।

उत्तर: 'चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें' — असंभव से लगने वाले बड़े लक्ष्यों के लिए भी हठ और दृढ़ता से प्रयास करते रहो।

प्रश्नावली 3.4 — कविता का शीर्षक (वैकल्पिक शीर्षक)

प्रश्न 1

इस कविता का शीर्षक 'एक आशीर्वाद' है जो कविता में कहीं भी प्रयुक्त नहीं हुआ है। यदि इस कविता की ही किसी पंक्ति या शब्द को कविता का शीर्षक बनाना हो तो आप कौन-सी पंक्ति या शब्द चुनेंगे और क्यों?

हल

कविता से सबसे उपयुक्त शीर्षक हो सकता है — 'तेरे स्वप्न बड़े हों'।

कारण: यह पंक्ति कविता में दो बार आती है — आरंभ में और अंत में — अर्थात् यह कविता का केंद्रीय भाव है।

पूरी कविता इसी एक आशीर्वाद के विस्तार के रूप में है — बड़े सपने देखो, पृथ्वी पर चलना सीखो, रूठो-मचलो, हँसो, उँगली जलाओ और अपने पाँवों पर खड़े हो जाओ।

दूसरा विकल्प: शीर्षक 'स्वप्न' रखा जा सकता है क्योंकि कविता में यही एकमात्र संज्ञा है जिसके चारों ओर सभी क्रियाएँ बुनी गई हैं।

अतः 'तेरे स्वप्न बड़े हों' सर्वाधिक उपयुक्त वैकल्पिक शीर्षक है।

उत्तर: 'तेरे स्वप्न बड़े हों' — यह पंक्ति कविता में दो बार आती है और पूरे काव्य का केंद्रीय भाव व्यक्त करती है।

प्रश्नावली 3.5 — भाषा की बात — असमानार्थी शब्द पहचान

प्रश्न 1

कविता में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं और उनके सामने कुछ अन्य शब्द भी दिए गए हैं। उन शब्दों पर घेरा बनाइए जो समान अर्थ न देते हों— शब्द | अन्य शब्द पृथ्वी | धरा | वसुधा | अवनि | सुता चाँद | मधुकर | शशि | निशाकर | मयंक तारे | नक्षत्र | सोम | तारक | उडुगण रोशनी | प्रकाश | लालिमा | उजाला | आलोक स्वप्न | सपना | इच्छा | यथार्थ | कल्पना दीया | दीन | ज्योति | दीपक | प्रदीप

हल

पृथ्वी — धरा (पृथ्वी ✓), वसुधा (पृथ्वी ✓), अवनि (पृथ्वी ✓), सुता (पुत्री — पृथ्वी का पर्यायवाची नहीं ✗)। → सुता पर घेरा।

चाँद — मधुकर (भ्रमर/मधुमक्खी — चाँद का पर्यायवाची नहीं ✗), शशि (चाँद ✓), निशाकर (रात को रोशन करने वाला = चाँद ✓), मयंक (चाँद ✓)। → मधुकर पर घेरा।

तारे — नक्षत्र (तारा ✓), सोम (चंद्रमा — तारे का पर्यायवाची नहीं ✗), तारक (तारा ✓), उडुगण (तारों का समूह ✓)। → सोम पर घेरा।

रोशनी — प्रकाश (रोशनी ✓), लालिमा (लाली/लाल रंग — प्रकाश का पर्यायवाची नहीं ✗), उजाला (रोशनी ✓), आलोक (प्रकाश ✓)। → लालिमा पर घेरा।

स्वप्न — सपना (स्वप्न ✓), इच्छा (इच्छा/कामना — स्वप्न का पर्यायवाची नहीं, निकटार्थी है), यथार्थ (वास्तविकता — स्वप्न का विपरीतार्थी ✗), कल्पना (कल्पना — स्वप्न के निकट)। → यथार्थ पर घेरा।

दीया — दीन (गरीब/धर्म — दीपक का पर्यायवाची नहीं ✗), ज्योति (दीपक की रोशनी/दीपक ✓), दीपक (दीया ✓), प्रदीप (दीपक ✓)। → दीन पर घेरा।

उत्तर: सुता (पृथ्वी नहीं — पुत्री); मधुकर (चाँद नहीं — भ्रमर); सोम (तारे नहीं — चंद्रमा); लालिमा (रोशनी नहीं — लाली); यथार्थ (स्वप्न नहीं — वास्तविकता); दीन (दीया नहीं — गरीब/धर्म) — इन छह शब्दों पर घेरा बनाना है।